धरती आबा - बिरसा मुंडा

जयदेव दास

बिरसा मुंडा

(15 नवम्बर 1875 - 9 जून 1900)

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ़्तारियाँ हुईं।

जनवरी 1900 डोम्बरी पहाड़ पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत सी औरतें व बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ़्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल से अंग्रेजों द्वारा गिरफ़्तार कर लिया गया। बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 ई को आंग्रेजों द्वारा जहर देकर मर गया ।1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है।

बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय विमानक्षेत्र भी है। 10 नवंबर 2021 को भारत सरकार ने 15 नवंबर यानी बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की।

जयदेव दास

जयदेव दास मन-काय-वचन से पूर्णतया काशी के हैं। दो दशक से भी अधिक समय से रंगकर्म में सक्रिय हैं । नाटकों में अभिनय निर्देशन के साथ साथ नाटक लिखना पसन्द हैं। अब तक अपने ही नाटकों को मंच प्रस्तुति भी देते रहे हैं। दर्शकों की ओर से भी इन नाटकों को भरपूर सराहा गया है। ओह काफ्का, पिघला चाँद, इत्ती सी बात जैसे नाटकों की एक लंबी सूची है। सद्य ही नया 'धरती आबा-बिरसा मुंडा' जननायक बिरसा मुंडा के जीवन पर लिखा गया नाटक है। सुधि पाठकों से प्रोतसाहन की आशा है।

धरती आबा - बिरसा मुंडा

जयदेव दास

धरती आबा - बिरसा मुंडा

(नाटक)

जयदेव दास

नाट्य विषय में स्नातक

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवम्बर, 2021

© जयदेव दास

आप्त

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' सम्पूर्ण देश में मनाने का प्रयास हो रहा है। ऐसे में हम यदि उन योद्धाओं को भी स्मरण कर लें जो किन्हीं कारणों से थोड़े से एकाकी हो चले हैं, तो अच्छा होगा। नई पीढ़ी तक उनकी कहानी पहुँचनी बहुत जरूरी है।

मेरा दायरा रंगमंच है। पर वह भी पिछले लगभग दो सालों से कोविड संक्रमण के चलते स्थिर हो गया है। अब कहीं कहीं कुछ हालात स्वाभाविक हो रहे हैं, पर अभी भी मंच प्रस्तुति होने में सहजता नहीं आ पाई है। मैं सदैव अपने लिखे नाटकों को मंचित ही करने पक्षधर हूँ। एक कारण यह भी है कि नाटक पढ़ने से ज्यादा देखने से ही आनन्द मिलता है।

मेरे मन में सदैव वीर बिरसा मुंडा के प्रति एक कौतूहल रहा है। काम करने की मनसा रही है। लॉक डाउन के शिथिल होने के बाद से ही लगने लगा कि अब वीर बिरसा मुंडा पर ही नाटक करूंगा।

बिरसा मुंडा 1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस

होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ़्तारियाँ हुई।

जनवरी 1900 डोम्बरी पहाड़ पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत सी औरतें व बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ़्तारियाँ भी हुई। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल से अंग्रेजों द्वारा गिरफ़्तार कर लिया गया। बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 ई को आंग्रेजों द्वारा जहर देकर मर गया। 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है।

बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय विमानक्षेत्र भी है। 10 नवंबर 2021 को भारत सरकार ने 15 नवंबर यानी बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की।

वीर बिरसा मुंडा पर लिखने बैठ गया। नाटक लिख भी गया। पर इसबार लगा कि नाटक को प्रकाशित भी करना चाहिए।

-जयदेव दास

कथासार

गांव में बा पोरोब मनाया जा रहा है। गीत संगीत के संग नृत्य भी हो रहा है। नन्हा 'स गेन' अपने दादा यानी 'ततंग' के साथ ये सब देख रहा है। और उसे इन सब रीति रिवाज, जंगल, पहाड़, सूरज आदि के बारे में जानकारी देते हुए ततंग अपने वीर व महान नायक बिरसा मुंडा के बारे में भी बताता है। वह कहता है कि बिरसा मुंडा का जन्म को रांची जिले के उलिहतु गाँव में हुआ था। मुंडा रीती रिवाज के अनुसार उनका नाम बृहस्पतिवार के हिसाब से बिरसा रखा गया था। बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हटू था। उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरुमब्दा आकर बस गया जहा वो खेतो में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बम्बा चला गया।

बिरसा मुंडा का परिवार घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करता था। बिरसा बचपन से अपने दोस्तों के साथ रेत में खेलते रहते थे और थोड़ा बड़ा होने पर उन्हें जंगल में भेड़ चराने जाना पड़ता था। जंगल में भेड़ चराते वक़्त समय व्यतीत करने के लिए बाँसुरी बजाया करते थे और कुछ दिनों बाँसुरी बजाने में उस्ताद हो गये थे। उन्होंने कद्दू से एक एक तार वाला वादक यंत्र तुइला बनाया था जिसे भी वो बजाया करते थे।

1886 से 1890 का दौर के जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ रहा जिसमे उन्होंने इसाई धर्म के प्रभाव में अपने धर्म का अंतर समझा। उस समय सरदार आंदोलन शुरू हो गया था इसलिए उनके पिता ने उनको स्कूल छुड़वा दिया। क्योंकि वो इसाई स्कूलों का विरोध कर रही थी। अब सरदार आन्दोलन की वजह से उनके दिमाग में इसाइयो के प्रति विद्रोह की भावना जागृत हो गयी थे। बिरसा मुंडा भी सरदार आन्दोलन में शामिल हो गये थे और अपने पारम्परिक रीती रिवाजो के लिए लड़ना शुरू हो गये थे। अब बिरसा मुंडा आदिवासियों के जमीन छीनने, लोगो को इसाई बनाने और युवतियों को दलालों द्वारा उठा ले जाने वाले कुकृत्यों को अपनी आँखों से देखा था जिससे उनके मन में अंग्रेजो के अनाचार के प्रति क्रोध की ज्वाला भड़क उठी थी।

अब वो अपने विद्रोह में इतने उग्र हो गये थे कि आदिवासी जनता उनको भगवान मानने लगी थी और आज भी आदिवासी जनता बिरसा को भगवान बिरसा मुंडा के नाम से पूजती है। उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म के सिद्धांतो को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौ-हत्या का विरोध करने की लोगो को सलाह दी। अब उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया “रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो”। उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाको में याद किया जता है। अंग्रेज़ों ने

आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किय जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजो के विरुद्ध मोर्चा खोल दिय था।

बिरसा मुंडा ने किसानों का शोषण करने वाले ज़मींदारों के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा भी लोगों को दी। यह देखकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें लोगों की भीड़ जमा करने से रोका। बिरसा का कहना था कि मैं तो अपनी जाति को अपना धर्म सिखा रहा हूँ। इस पर पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार करने का प्रयत्न किया, लेकिन गांव वालों ने उन्हें छुड़ा लिया। शीघ्र ही वे फिर गिरफ़्तार करके दो वर्ष के लिए हज़ारीबाग़ जेल में डाल दिये गये। बाद में उन्हें इस चेतावनी के साथ छोड़ा गया कि वे कोई प्रचार नहीं करेंगे।

24 दिसम्बर, 1899 को यह बिरसा मुंडा आन्दोलन आरम्भ हुआ। तीरों से पुलिस थानों पर आक्रमण करके उनमें आग लगा दी गई। सेना से भी सीधी मुठभेड़ हुई, किन्तु तीर कमान गोलियों का सामना नहीं कर पाये। बिरसा मुंडा के साथी बड़ी संख्या में मारे गए। उनकी जाति के ही दो व्यक्तियों ने धन के लालच में बिरसा मुंडा को गिरफ़्तार करा दिया। 9 जून, 1900 ई. को जेल में उनकी मृत्यु हो गई। शायद उन्हें विष दे दिया गया था।